हँसते जाओ, पेट घटाओ!

देवकी नंदन

- डॉक्टर (ग्रामीण मरीज़ से) : कल मैंने जो दवा तुम्हें दी थी, वो पी ली थी?
मरीज़ : नहीं जी, वो नीली थी!

डॉक्टर : मेरा मतलब है कि तुमने मेरी दी हुई दवा को पी लिया था?
मरीज़ : नहीं जी, दवा को पीलिया कहाँ था, पीलिया तो मुझे था!

- पिता (बेटे से) : सुना है आज तुम्हारी परीक्षा के नतीजे आए हैं। कितने अंक मिले?
बेटा : पिताजी, समुद्र जितना सिलेबस था, नदी जितना याद कर पाया, झील जितना लिख पाया और पोखर जितने अंक ही आए हैं।
पिता : ठीक है, तो चुल्लू भर पानी में डूब मर!

- छात्र (ऑप्टीशियन से) : सर, मेरी 50 वर्षीय टीचर के लिए एक चश्मा चाहिए। उन्हें ठीक से दिखता नहीं।

ऑप्टीशियन : अच्छा, पर असली समस्या क्या है उनकी आंखों में?
छात्र : यही कि मैं उन्हें गधा दिखता हूँ।

- छात्र टीचर से : सर, कोयला कहां से मिलता है?
टीचर : कोयला खान से प्राप्त किया जाता है।

छात्र : अच्छा? मुझे पता नहीं था कि सलमान, शाहरुख और आमिर खान कोयले का व्यापार भी करते हैं!

- टीचर (छात्र से) : कृष्णा, क्या घर की बिजली और बादलों की बिजली में कोई फर्क है?
छात्र : जी सर, बादल की बिजली का कोई बिल नहीं भरना पड़ता।

- परीक्षा पत्र में सवाल था : 'अपने प्रिय और रोमांचक खेल का वर्णन कीजिए।'
इस पर एक विद्यार्थी ने बस इतना लिखा : 'क्रिकेट का खेल इतना ज्यादा रोमांचक है कि शब्दों में इसका वर्णन संभव नहीं।'

- पिता (बेटे से) : अच्छा श्याम, बताओ कि थर्ड वर्ल्ड वार हो जाए तो क्या होगा?

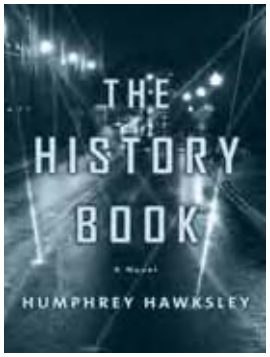

श्याम : मुसीबत ही मुसीबत, और क्या?
पिता (उत्साहित होकर) : शाबाश, बताओ कि क्या मुसीबत आएगी?
श्याम : हमारे लिए इतिहास की पुस्तक में एक और चेप्टर, क्या यह कोई छोटी मुसीबत है?

- वैज्ञानिक (बेटे से) : देखो तनय, तुम अक्सर अठन्नी मुंह में डाल कर उसे चूसते रहते हो, यह गंदी आदत है। आप इससे बीमार हो सकते हो।
तनय : वो कैसे डैडी?
वैज्ञानिक : क्योंकि सैकड़ों हाथों से आप तक पहुंची अठन्नी पर जीवित बैक्टीरिया हो सकते हैं।

वैज्ञानिक अट्टहास

इसे मुंह में डालना, मतलब बीमारी बुलाना है न?
तनय : पर पिताजी, आज की मंहगाई में अठन्नी पर एक बैक्टीरिया भी जिंदा रह सकता है क्या?

- अध्यापक (छात्रा से) : शिखा, बताओ दुनिया का सबसे बड़ा देश कौनसा है?
शिखा : श्रीलंका सर !

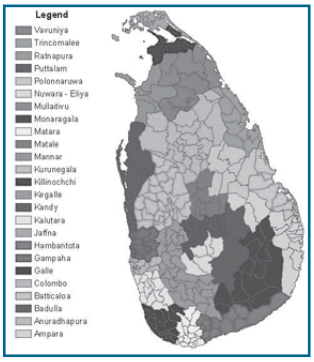

अध्यापक : ये जवाब सही नहीं, पर तुमने श्रीलंका का ही नाम क्यों लिया?
शिखा : आप ही ने कहा था न सर, कि बड़ों के नाम के आगे हम श्री लगाते हैं! है न?

- डॉक्टर (मरीज से) : नींद नहीं आती? ऐसा करो कि बिस्तर पर लेटने के बाद रोज़ दस तक गिनती गिनो। धीरे-धीरे नींद आने लगेगी।

मरीज़ : इससे मुझे नींद नहीं आती। इसे आज़मा चुका हूँ।
डॉक्टर : बाकी मरीज़ों को तो आती है, आप ही को इससे नींद क्यों नहीं आती?
मरीज़ : इसलिए कि मैं बॉक्सर हूँ। दस गिनने से पहले ही आदतन उठ खड़ा होता हूँ।

- पोता (दादी से) : मैं परमाणु भट्ठी से जुड़ा काम करता हूँ। यह भट्ठी कोयले की भट्ठी से बहुत

अधिक गरम होती है।
दादी (खुश होकर) :अच्छा, आज एक परमाणु भट्ठी लेता अइयो। कोयला भट्ठी पे बैंगन ठीक से भुनतो नाय!

संपर्क सूत्र :
डा. देवकी नंदन, 2205, न्यू जय भारत सोसायटी, प्लॉट-5, सेक्टर-4, द्वारका, नई दिल्ली-110 075

विज्ञान काव्य

फूलों का रस

बगिया के घर बैठी तितली फूलों का रस पीती है,
सुन्दर मौसम प्यारा झरना पर्यावरण सरिता होती है।
झूमे वृक्ष लताएं बहकी शुद्ध वायु का झोंका आता,
ऋतुएं भी बहकी सी आंचल खुशबू का भिगोती हैं।
बगिया के घर बैठी तितली फूलों का रस पीती है,
मन प्रफुल्लित होता है जब सुन्दर पर्यावरण चतुर्दिक,
वसुन्धरा के घर सुखद सलोनी हरियाली पाहुन होती है।
अन्न धन फल फूल सदा सजते शस्य श्यामला धरती पर,
भौंरे झूमे पक्षी घूमे घर कोयल के रस डूबी बारिश होती है।
बगिया के घर बैठी तितली फूलों का रस पीती है,
नव संगीत बजा करता है प्रकृति की देखो हर सीमा पर,
वृक्ष तले बैठो शांति से मन में अद्भुत शक्ति पलती है।
स्वस्थ पर्यावरण सदा ही काया निरोगी का होता रक्षक,
नव जीवन की देन सदा वह भोर सुहानी होती है।
बगिया के घर बैठी तितली फूलों का रस पीती है।।

श्री कमल सिंह चौहान, कविता निवास, दुर्गा मंदिर के पास, रेलवे स्टेशन रोड, बीड़, जि.-खंडवा (म.प्र.)
[फोन : 07326-286847 ; मो: 09926950433]

विज्ञान काव्य

बायो-मास ऊर्जा

दिनेश चमोला 'शैलेश'

भारत को ऊर्जा संकट से, मुक्त करें हम, सारा।
बायो मास ऊर्जा से कर दें, घर-बाहर उजियारा ।।
उद्योग विषैला धुआं उगलते,
नदियों में कचरा बहता,
दमघोटू - कनफोडू वाहन
से जग आतंकित रहता।
अधिक उपज हित कई रसायन
अन्न प्रदूषित करते,
भूख, गरीबी, बीमारी से
जड़ - चेतन सब डरते।
ईंधन उपयोगी हो ऐसा, जीव-जगत हितकारी।
बायो-मास ऊर्जा ही हर विधि, केवल मंगलकारी ।।
शक्ति उर्वरा नष्ट हो रही
सकल धरा की पल में,
असंख्य वृक्ष, वन कटे जा रहे
चाहत में या छल में।
जीव-जगत पर नित्य आपदा
संकट दुनिया भर के,
मौसम - चक्र बिगड़ता, जीवन
की खुशियां सब हर के
सड़क वाहनों से जीवन पर, संकट छाया भारी।
संभले अगर न तो फिर समझो, मरने की तैयारी ।।
पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों की
अब चुकने की बारी,
आज नहीं तो कल समाप्त ये
फिर तो बस लाचारी ।
बायो-मास सुलभ व सस्ता
विकल्प बने ऊर्जा का,
जीवित-मृत प्राणि अपशिष्ट है
मुख्य स्रोत इस सबका।
इन सब स्रोतों से जब होगी, मांग ऊर्जा की पूरी।
दूर स्वतः होगी पेट्रोलियम, निर्भरता, मजबूरी।।
नारियल जटा, मक्के की गुल्ली
पुआल, डंठल या भूसा,
मानव या पशु मल से निर्मित
हो ऊर्जा मंजूषा।
अनुपयोगी सभी वस्तुएं
उपयोगी जब होंगी,
वन संरक्षण से सभी जरूरतें
पूरी ही तब होंगी।
कुछ देशों में सौ से नब्बे, मांगें इससे पूरी।
आओ, आत्मनिर्भर बन हर लें, ऊर्जा की मजबूरी ।।
हालत सुधरेगी किसान की
संरक्षण होगा वन का,
सुंदर पर्यावरण रहेगा
स्तर बढ़े जीवन का।
खपत तेल में, कमी सुनिश्चित
ऊर्जा विपद घटेगी,
आयात तेल व्यय, सकल बचत हो
पूंजी राष्ट्र बढ़ेगी
बायो मास ही हर सकती है, ऊर्जा की मजबूरी।
स्वागत नव ऊर्जा विकल्प, जिससे हों मांगें पूरी।।

श्री डॉ दिनेश चमोला 'शैलेश', संपादक 'विकल्प', भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून - 248 005
[ई-मेल : chamoladc@yahoo.com]

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सी.एस.आई.आर.), डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110012 के लिए श्रीमती दीक्षा बिष्ट द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा बृजबासी आर्ट प्रेस लिमिटेड, ई-46/11, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेस-2, नयी दिल्ली-110 020 एवं इकाई ए-80-81, सेक्टर-5, नोएडा द्वारा मुद्रित।